

डैनियल की पुस्तक - संख्या निन्यानवे

अंतिम दिनों और परमेश्वर का न्याय: भविष्यसूचक अंतर्दृष्टियों का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-02-29

‘अंतिम दिनों’ का आशय पहले स्वर्गदूत के आंदोलन में न्याय के उद्घाटन की घोषणा से है, और तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में न्याय के समापन की घोषणा की जाती है। ‘अंतिम दिनों’ में ईश्वर की प्रजा को ईश्वर के न्याय की घोषणा करने के लिए उठाया गया था, और अब भी उठाया जा रहा है; परंतु ईश्वर के न्याय का संदेशवाहक बनने के लिए, आपको न्याय को समझना होगा। लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म की एक प्रमुख विशेषता—विद्वान वर्ग और अविद्वान वर्ग, दोनों में—यह है कि वे ईश्वर के न्याय को नहीं जानते। सभी भविष्यद्वक्ता जिन दिनों में वे रहते थे, उनकी अपेक्षा ‘अंतिम दिनों’ को अधिक विशेष रूप से संबोधित करते हैं।

प्रत्येक प्राचीन भविष्यद्वक्ता ने अपने समय के लिए कम और हमारे समय के लिए अधिक कहा, ताकि उनकी भविष्यवाणियाँ हमारे लिए लागू रहें। “अब ये सब बातें उनके साथ उदाहरण के लिए हुईं; और वे हमारे चैतावनी के लिए लिखी गई हैं, हम पर, जिन पर संसार का अन्त आ पहुँचा है।” 1 कुरिन्थियों 10:11। सेलेक्टेड मैसेजेस, पुस्तक 3, 338.

सभी भविष्यद्वक्ता आपस में सहमत हैं; इसलिए उनकी सभी भविष्यवाणियाँ एक ही चित्रण प्रस्तुत करती हैं, और वह चित्रण अंतिम दिनों का है, जो न्याय के दिन हैं।

और भविष्यद्वक्ताओं की आत्माएँ भविष्यद्वक्ताओं के वश में हैं। क्योंकि परमेश्वर अशान्ति का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्ता है, जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है। 1 कुरिन्थियों 14:32, 33.

अध्याय आठ से शुरू होने वाले यहजेकेल के दर्शन में यरूशलेम, परमेश्वर की कलीसिया है, जो अंतिम दिनों में लाओदिकिया की सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया है। यहजेकेल के अध्याय आठ और नौ, परमेश्वर के घर के न्याय के समापन में उपासकों के दो वर्गों की पहचान कराते हैं। एक वर्ग का प्रतिनिधित्व सूर्य को प्रणाम करने वाले पच्चीस बुजुर्ग पुरुष करते हैं, परंतु जो कलीसिया और देश में किए जा रहे घृणित कर्मों पर आहें भरते और रोते हैं, वे परमेश्वर की मुहर प्राप्त करते हैं। अध्याय ग्यारह में, यहजेकेल का दर्शन सूर्य को प्रणाम करने वाले उन पच्चीस पुरुषों के दंड के चित्रण को आगे बढ़ाता है।

और फिर आत्मा ने मुझे उठा लिया, और मुझे प्रभु के घर के पूर्वी फाटक तक ले गई, जो पूर्व की ओर मुख किए हुए है; और देखो, फाटक के प्रवेश पर पच्चीस पुरुष थे; जिनमें मैंने अज़ूर के पुत्र याज़ान्याह और बनायाह के पुत्र पेलतियाह को देखा, जो लोगों के प्रधान थे। तब उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के पुत्र, ये वे पुरुष हैं जो अनिष्ट की योजना बनाते हैं और इस नगर में दुष्ट परामर्श देते हैं; जो कहते हैं, ‘यह निकट नहीं है; आओ, हम घर बनाएं; यह नगर हांडी है और हम मांस हैं।’ इसलिए उनके विरुद्ध भविष्यवाणी कर, भविष्यवाणी कर, हे मनुष्य के पुत्र। और प्रभु की आत्मा मुझ पर उतरी और मुझसे कहा, बोल: प्रभु यों कहता है: हे इस्राएल के घराने, तुमने ऐसा कहा है; क्योंकि जो बातें तुम्हारे मन में आती हैं, मैं उनमें से हर एक को जानता हूँ। तुमने इस नगर में अपने मारे हुआओं की संख्या बढ़ा दी है, और उसकी गलियों को मारे हुआओं से भर दिया है। इस कारण प्रभु परमेश्वर यों कहता है: तुम्हारे मारे हुए जिन्हें तुमने इसके बीच में रखा है, वही मांस हैं, और यह नगर हांडी है; परन्तु मैं तुम्हें इसके बीच से बाहर निकालूँगा। तुमने तलवार से भय खाया है; और मैं तुम्हारे ऊपर तलवार ले आऊँगा, ऐसा प्रभु परमेश्वर कहता है। और मैं तुम्हें उसके बीच से बाहर निकालूँगा, और तुम्हें परदेशियों के हाथ में सौंप दूँगा, और तुम्हारे बीच न्याय करूँगा। यहजेकेल 11:1-9.

येरूशलेम को 'हांडी' के रूप में पहचाना गया है, और येरूशलेम के लोगों को 'मांस' कहा गया है, जो हांडी में पक रहा है; हांडी अर्थात एक बर्तन। एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय, जब स्वर्गदूत अपने हाथों में नाश करने वाले हथियार लेकर दुष्टों पर न्याय करते हैं (क्योंकि सिस्टर वाइट कहती हैं कि यहजेकेल अध्याय नौ की मुहरबंदी और प्रकाशितवाक्य अध्याय सात की मुहरबंदी एक ही हैं), उसमें यह सत्य समाहित है कि दुष्टों को येरूशलेम से हटा दिया जाता है। शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय, आध्यात्मिक येरूशलेम को शुद्ध किया जाएगा और उसे सभी पर्वतों के ऊपर एक ध्वज की तरह ऊँचा उठाया जाएगा।

और ऐसा होगा कि अंतिम दिनों में यहोवा के भवन का पर्वत पर्वतों की चोटी पर स्थापित किया जाएगा, और वह पहाड़ियों से ऊपर ऊँचा किया जाएगा; और सब जातियाँ उसकी ओर बहेंगी। और बहुत से लोग आएँगे और कहेंगे, 'आओ, हम यहोवा के पर्वत पर, याकूब के परमेश्वर के भवन में चलें; वह हमें अपनी राहें सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे,' क्योंकि सिख्योन से व्यवस्था निकलेगी, और येरूशलेम से यहोवा का वचन। यशायाह 2:2, 3.

रविवार के कानून के समय येरूशलेम के लिए जो शुद्धिकरण सम्पन्न होता है, वह लाओदीकिया के एडवेंटिस्टों को हटाया जाना है, ताकि केवल फिलाडेल्फिया के एडवेंटिस्ट शेष रहें। तब कानूनी कॉरपोरेट संरचना समाप्त हो जाती है, क्योंकि 1863 में बनाई गई कानूनी व्यवस्था में संयुक्त राज्य सरकार नियंत्रक इकाई है, और जब संयुक्त राज्य की सरकार देश में रविवार के पालन को लागू करती है, तो सातवें दिन की एडवेंटिस्ट कलीसिया की कॉरपोरेट संरचना या तो कानूनी रूप से भंग कर दी जाती है, या शायद उसका नाम कानूनी रूप से बदलकर रविवार एडवेंटिस्ट कलीसिया जैसे किसी रूप में कर दिया जाता है।

जब येरूशलेम के दुष्टों को विनाशक स्वर्गदूतों द्वारा देग से बाहर निकाल दिए जाते हैं, तो लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट कलीसिया का अंत हो जाता है, और फिलाडेल्फियाई आंदोलन आध्यात्मिक येरूशलेम बन जाता है, जिसे एक ध्वज के समान ऊँचा उठाया जाता है। मीका उन प्राचीन पुरुषों को संबोधित करता है, जिन्हें यशायाह उन उपहास करने वालों के रूप में बुलाता है जो प्रकाश को अंधकार और अंधकार को प्रकाश कहते हैं, और एक प्रश्न के माध्यम से बताता है कि उन प्राचीन पुरुषों को "न्याय" जानना चाहिए था। उन्हें अपनी सुधि लिए जाने का समय जानना चाहिए था।

और मैंने कहा, सुनो, मैं तुमसे विनती करता हूँ, हे याकूब के मुखियों, और इस्राएल के घराने के प्रधानों; क्या न्याय को जानना तुम्हारा काम नहीं है? जो भलाई से बैर रखते हैं और बुराई से प्रेम करते हैं; जो लोगों की चमड़ी उनसे उधेड़ लेते हैं, और उनकी हड्डियों से उनका मांस उतारते हैं; जो मेरे लोगों का मांस भी खाते हैं, और उनकी चमड़ी उनसे उधेड़ लेते हैं; और उनकी हड्डियाँ तोड़ते हैं, और उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके हांडी के लिए, और कड़ाही के भीतर के मांस की तरह काटते हैं। मीका 3:1-3.

ईश्वर ने यह इरादा किया था, और अब भी करते हैं, कि उनकी अंतकालीन प्रजा 'न्याय को जानें', और न्याय कोई एक ही अवधारणा नहीं है। यह एक क्रमिक इतिहास है, जिसमें कई घटक और विशिष्ट मील के पत्थर हैं। यह एक भविष्यसूचक काल है जो 1798 में आरंभ हुआ और सहस्राब्दी के अंत तक चलता है। यह अन्वेषणात्मक भी है और कार्यकारी भी। यह पृथ्वी पर कभी भी जीवित रहे हर मनुष्य पर, और उन स्वर्गदूतों पर भी, जो स्वर्ग से निष्कासित किए गए थे, प्रवर्तित किया जाता है। न्याय के इन कालखंडों की समझ अंत दिनों में परमेश्वर के विश्वासियों के लिए अत्यावश्यक है, क्योंकि मीका के प्रश्न का उत्तर है, "हाँ, इस्राएल को न्याय समझना है।"

यिर्मयाह यह बताता है कि अन्तिम दिनों में येरूशलेम के प्राचीन पुरुष एक "निरन्तर पथभ्रष्टता" की चरम परिणति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसा कि उत्तरोत्तर बढ़ती बगावत की चार पीढ़ियों द्वारा दर्शाया गया है, जिसका प्रतीक यहजेकेल अध्याय आठ की चार उत्तरोत्तर बढ़ती घृणित बातों से किया गया है। यिर्मयाह यह भी बताता है कि वे प्राचीन पुरुष आध्यात्मवाद में लिप्त हैं, क्योंकि वे "सूर्य, चन्द्रमा, और आकाश की समस्त सेना" की "उपासना" करते हैं। वह यह पहचानता है कि वे "गिरेंगे, और उठेंगे नहीं," क्योंकि "उन्होंने यहोवा के वचन को अस्वीकार किया है।"

इन विशेषताओं के साथ यिर्मयाह यह ठहराता है कि "लोग यहोवा के न्याय को नहीं जानते।"

उसी समय, यहोवा की यह वाणी है, वे यहूदा के राजाओं की हड्डियाँ, उसके राजकुमारों की हड्डियाँ, याजकों की हड्डियाँ, भविष्यद्वक्ताओं की हड्डियाँ, और यरूशलेम के निवासियों की हड्डियाँ उनकी कब्रों से निकालेंगे; और वे उन्हें सूर्य, चन्द्रमा और आकाश की सारी सेना के सामने बिखेर देंगे, जिन्हें उन्होंने प्रेम किया है, जिनकी उन्होंने सेवा की है, जिनके पीछे वे चले हैं, जिन्हें उन्होंने खोजा है, और जिनकी उन्होंने उपासना की है; वे न तो इकट्ठी की जाएँगी, न दफनाई जाएँगी; वे पृथ्वी के ऊपर गोबर के समान पड़ी रहेंगी। और इस दुष्ट कुल के जो बचे-खुचे लोग उन सब स्थानों में रह गए हैं जहाँ मैंने उन्हें हाँक दिया है, वे सब जीवन की अपेक्षा मृत्यु को चुनेंगे, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है। फिर तू उनसे कहना, यहोवा यूँ कहता है: क्या लोग गिरकर नहीं उठते? क्या कोई मुड़कर लौटता नहीं? तो फिर यह यरूशलेम की प्रजा निरंतर पीठ फेरकर पीछे क्यों खिसक गई है? वे छल को कसकर पकड़े हुए हैं; लौटने से इन्कार करते हैं। मैंने ध्यान देकर सुना, पर वे ठीक नहीं बोलते; किसी ने अपनी दुष्टता पर पछताकर यह नहीं कहा, मैंने क्या किया है? हर एक अपने मार्ग की ओर दौड़ पड़ता है, जैसे घोड़ा युद्ध में धावा बोलता है। हाँ, आकाश का लकलक अपने नियत समयों को जानता है; और फाखता, सारस और अबाबील अपने आने का समय मानते हैं; पर मेरी प्रजा यहोवा का न्याय नहीं जानती। तुम कैसे कहते हो, हम बुद्धिमान हैं, और यहोवा की व्यवस्था हमारे पास है? देखो, निश्चय ही उसे व्यर्थ बना दिया गया है; शास्त्रियों की कलम व्यर्थ है। ज्ञानी लोग लज्जित हैं, वे विचलित होकर पकड़े गए हैं; देखो, उन्होंने यहोवा के वचन को ठुकरा दिया है; तो उनमें कैसी बुद्धि है? यिर्मयाह 8:1-9.

अध्याय पाँच में, यिर्मयाह उन लोगों को "मूर्ख" कहता है जो प्रभु के न्याय को नहीं जानते।

यरूशलेम की गलियों में इधर-उधर दौड़ो, और अब देखो, और जानो, और उसके चौकों में खोजो कि क्या तुम कोई एक मनुष्य पा सकते हो, कोई ऐसा जो न्याय करता हो, जो सत्य की खोज करता हो; तब मैं उस नगर को क्षमा कर दूँगा। और यद्यपि वे कहते हैं, "प्रभु जीवित है," तो भी वे निश्चय ही झूठी शपथ खाते हैं। हे प्रभु, क्या तेरी दृष्टि सत्य पर नहीं है? तूने उन्हें मारा, पर वे शोकित नहीं हुए; तूने उन्हें नाश किया, पर उन्होंने सुधार स्वीकार करने से इनकार किया; उन्होंने अपने चेहरे को चट्टान से भी कठोर बना लिया है; वे लौटने से इनकार करते हैं। इसलिए मैंने कहा, निश्चय ही ये गरीब हैं; ये मूर्ख हैं; क्योंकि वे न तो प्रभु का मार्ग जानते हैं, और न अपने परमेश्वर का न्याय। यिर्मयाह 5:1-4.

अंतिम दिनों के लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म में, वे जो दस कुँवारियों के दृष्टान्त की मूर्ख कुँवारियों के रूप में निरूपित हैं, जिसे सिस्टर वाइट 'एडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव' का प्रतिनिधित्व करने वाला बताती हैं, 'प्रभु का मार्ग नहीं जानते, न अपने परमेश्वर के न्याय को।' अगले अध्याय में यिर्मयाह बताता है कि प्रभु का 'मार्ग' 'पुराने पथ' हैं, परंतु मूर्ख लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट उसमें चलने से, या नरसिंगे की ध्वनि पर ध्यान देने से, इनकार करते हैं। 'नरसिंगा' न्याय का प्रतीक है, जिसे बेशक मूर्ख लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट नहीं जानते।

प्रभु यों कहता है: मार्गों में खड़े होकर देखो, और प्राचीन पथों के विषय में पूछो—कि भला मार्ग कहाँ है; और उसी में चलो, तब तुम अपने प्राणों के लिये विश्राम पाओगे। परन्तु उन्होंने कहा, हम उस में नहीं चलेंगे। मैंने तुम्हारे ऊपर प्रहरी भी ठहराए, यह कहते हुए: तुरही का शब्द सुनो। परन्तु उन्होंने कहा, हम नहीं सुनेंगे। इसलिये, हे जातियों, सुनो; और हे सभा, जान लो कि उनके बीच क्या है। हे पृथ्वी, सुन: देखो, मैं इस प्रजा पर विपत्ति ले आऊँगा—अर्थात् उनके विचारों का फल—क्योंकि उन्होंने न मेरे वचनों को सुना, न मेरी व्यवस्था को; वरन् उसे ठुकरा दिया। यिर्मयाह 6:16-19.

वह "बुराई", जो उस "मंडली" पर लाई जाती है जिसने "तुरही की ध्वनि को सुनना" और "पुराने मार्गों" में "चलना", जहाँ "अन्तिम वर्षा" का "विश्राम" मिलेगा, से इनकार किया, तब घटित होती है जब "मंडली" शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय "उसकी व्यवस्था" को "अस्वीकार करती है"।

एलिय्याह का तीन-गुना अनुप्रयोग कार्यान्वयन न्याय के समय एक दूत और आंदोलन के कार्य की पहचान कराता है; यह न्याय शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के साथ आरंभ होता है। एलिय्याह के तीन-गुने अनुप्रयोग से घनिष्ठ रूप से संबंधित है उस दूत का तीन-गुना अनुप्रयोग जो वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करता है। मार्ग तैयार करने वाले उस दूत का तीन-गुना अनुप्रयोग अन्वेषणात्मक न्याय के समय किसी दूत और आंदोलन द्वारा किए जाने वाले कार्य की पहचान कराता है। मार्ग तैयार करने वाला दूत और एलिय्याह, दोनों निकट-संबंधित तीन-गुने अनुप्रयोग हैं, जैसे रोम का तीन-गुना अनुप्रयोग बाबुल के पतन के तीन-गुने अनुप्रयोग से संबंधित है; तथापि उनके बीच परमेश्वर के न्याय से जुड़ी महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हैं।

एलिय्याह के तीन बार के अनुप्रयोग और उस दूत का तीन बार का अनुप्रयोग जो वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करता है, दो भिन्न न्याय-कार्यों से संबंधित हैं, जो परमेश्वर द्वारा, अपने चुने हुए दूत और उस आंदोलन के माध्यम से जो दूत के संदेश से जुड़ता है, पूरे किए जाते हैं। वे दोनों कार्य न्याय की दो भिन्न अवधियों से जुड़े हैं, यद्यपि प्रतीकों के बीच अतिव्यापन है।

तीसरे और अंतिम एलिय्याह का कार्य आधुनिक बाबुल के त्रि-गुना संघ पर न्याय के क्रियान्वयन से संबंधित है, और मार्ग तैयार करने वाले दूत का कार्य परमेश्वर की प्रजा के जाँच-पड़ताल के न्याय और शुद्धिकरण से संबंधित है। मलाकी का तीसरा अध्याय, दूसरे अध्याय की अंतिम आयत से परिचय होता है।

तुम ने अपनी बातों से यहोवा को क्लान्त कर दिया है। फिर भी तुम कहते हो, 'हमने उसे किस बात से क्लान्त किया?' जब तुम कहते हो, 'जो कोई बुराई करता है वह यहोवा की दृष्टि में भला है, और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न होता है'; या, 'न्याय का परमेश्वर कहाँ है?' देखो, मैं अपना दूत भेजूँगा, और वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा; और जिस प्रभु को तुम ढूँढ़ते हो, वह अपने मंदिर में सहसा आएगा, अर्थात् वाचा का वह दूत, जिसमें तुम प्रसन्न होते हो; देखो, वह आएगा, सेनाओं का यहोवा कहता है। परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकता है? और जब वह प्रकट होगा तो कौन ठहर सकेगा? क्योंकि वह गलानेवाले की आग और धोबी के साबुन के समान है। और वह चाँदी को गलानेवाले और शुद्ध करनेवाले के समान बैठेगा; और वह लेवी के पुत्रों को शुद्ध करेगा, और उन्हें सोने और चाँदी के समान परिशोधित करेगा, ताकि वे यहोवा को धर्म के अनुसार भेंट चढ़ाएँ। तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को प्रीतिकर लगेगी, जैसे प्राचीन दिनों में, और जैसे पुराने वर्षों में। मलाकी 2:17-3:4.

अंत के दिनों में, मलाकी की गवाही के अनुसार, परमेश्वर लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म से थक गए हैं, जो 1888 के विद्रोह पर अड़ा हुआ है। 1888 के विद्रोह का प्रतिरूप कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह में था, और कोरह के विद्रोह का सिद्धान्तगत विवाद यह था कि जो बुराई करते हैं, क्या वे प्रभु की दृष्टि में अभी भी धर्मी हैं।

अब कोरह—इज़हार का पुत्र, कहात का पुत्र, लेवी का पुत्र—और दातान और अबीराम—एल्याब के पुत्र—और ओन—पेलेत का पुत्र—जो रूबेन के वंश के थे, उन्होंने कुछ लोगों को अपने साथ मिला लिया। और वे मूसा के सामने उठ खड़े हुए; इस्राएलियों में से कुछ—सभा के दो सौ पचास सरदार, मंडली में प्रसिद्ध, नामी पुरुष—उनके साथ थे। और वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे होकर उनसे बोले, तुम अपने ऊपर बहुत कुछ ले लेते हो, क्योंकि सारी मंडली, उनमें का हर एक, पवित्र है, और यहोवा उनके बीच में है; तो फिर तुम अपने आप को यहोवा की मंडली से ऊपर क्यों उठाते हो? गिनती 16:1-3.

अंतिम दिनों में, परमेश्वर लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म से क्लान्त हैं, जो 1957 के विद्रोह से चिपके हुए हैं, जो मात्र 1888 के विद्रोह का ही एक प्रकट रूप था, जिसे एक आधिकारिक वक्तव्य का रूप दे दिया गया। पुस्तक "Questions on Doctrine" ने 1888 के विद्रोह को प्रतिष्ठित कर दिया, जो कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह की पुनरावृत्ति थी—उस स्वर्गदूत की गवाही के अनुसार जिसने सिस्टर वाइट को निर्देश दिया कि उन्हें 1888 के सम्मेलन में ठहरना चाहिए, ताकि कोरह के विद्रोह के इतिहास की पुनरावृत्ति दर्ज की जा सके। दो सौ पचास प्रतिष्ठित पुरुष कोरह, दातान और अबीराम के साथ मिलकर, मूसा—जो परमेश्वर के प्रतिनिधि थे—के विरुद्ध उस विद्रोह में इकट्ठे हुए।

यहेजकेल के आठवें अध्याय में सूर्य को नमन करने वाले पच्चीस पुरुष, कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह में धूप अर्पित करने वाले दो सौ पचास पुरुषों के दशमांश, यानी दसवें हिस्से, का प्रतिनिधित्व करते हैं; वह विद्रोह 1888 के विद्रोह के नेताओं का प्रतीक था, जिनके सिद्धान्तगत विद्रोह को 1957 में पुस्तक "Questions on Doctrine" के प्रकाशन के साथ औपचारिक रूप दिया गया।

कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह ने उस 'न्याय' को अस्वीकार कर दिया जो परमेश्वर ने सुनाया था—कि वे चालीस वर्षों तक मरुभूमि में भटकेंगे। 1856 में प्रस्तुत लाओदीकियाई संदेश को अस्वीकार करने के बाद, लाओदीकियाई एडवेंटवाद ने 1863 में लाओदीकिया की मरुभूमि में भटकना शुरू कर दिया; उनके विश्वास की कमी के कारण, इससे कई और वर्षों तक मरुभूमि में भटकने का न्याय ठहराया गया। 1888 के विद्रोह में, वे अब भी एल्डर्स जोन्स और वैगनर द्वारा प्रस्तुत लाओदीकियाई संदेश को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे।

1888 में जिन्होंने विद्रोह किया, उन्होंने न केवल एल्डर जोन्स और वैगनर के आध्यात्मिक अधिकार को अस्वीकार किया, बल्कि भविष्यवक्त्री एलेन व्हाइट और पवित्र आत्मा के अधिकार को भी, क्योंकि उन्होंने इस धारणा के अनुसार आचरण किया कि पूरी मंडली समान रूप से पवित्र थी।

1863 में, वे बेतेल के झूठे नबी के साथ भोजन करने के लिए लौट आए थे, और ऐसा करते हुए उन्होंने अंततः उस उद्धार की परिभाषा को स्वीकार कर लिया जिसका प्रतिनिधित्व कोरह के विद्रोह ने किया था, और फिर उस झूठे सिद्धांत को "Questions on Doctrine" नामक पुस्तक में आधिकारिक रूप से प्रतिष्ठित कर दिया। वह सिद्धांत "विश्वास के द्वारा धर्म ठहराए जाने" की एक झूठी परिभाषा है।

1863 का विद्रोह, मिलर के रत्नों के अस्वीकार की शुरुआत था, जो हबक्कूक के दो पद्यों में परिलक्षित थे। हबक्कूक के दूसरे अध्याय में, पहले पद का 'विवाद' अंततः आराधकों के दो वर्ग उत्पन्न करता है, जो उस विलंबित संदेश के बारे में अपनी असहमति के कारण प्रकट हो जाते हैं।

देखो, जिसका मन घमण्ड से फूल गया है, वह उसके भीतर सीधा नहीं है; परन्तु धर्म अपने विश्वास से जीवित रहेगा। हबक्कूक 2:4.

हबक्कूक के अध्याय दो के 'वाद-विवाद' में 'धर्म' का 'विश्वास', उस 'दर्शन' पर आधारित था, जो पट्टिकाओं पर स्पष्ट रूप से लिखा गया था। 1863 के विद्रोह में, पट्टिकाओं पर जो लिखा था उसे हटाने का पहला कदम उन लोगों द्वारा उठाया गया, जिनके पास अब 'धर्म' का 'विश्वास' नहीं था। 1863 का विद्रोह, उस विद्रोह के पहले बीज का प्रतिनिधित्व करता था, जो अंततः 1957 में 'विश्वास द्वारा धर्म ठहराए जाने' के सिद्धांत की एक झूठी परिभाषा को प्रतिष्ठित कर देगा।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

प्रभु ने अपनी महान दया में एल्डर्स वैगनर और जोन्स के माध्यम से अपने लोगों के लिए एक अत्यंत मूल्यवान संदेश भेजा। यह संदेश संसार के सामने ऊँचा उठाया गया उद्धारकर्ता, जो समस्त संसार के पापों के लिए बलिदान है, को और अधिक प्रमुखता से प्रस्तुत करने के लिए था। इसने जामिन पर विश्वास के द्वारा धर्म ठहराए जाने को प्रस्तुत किया; इसने लोगों को मसीह की धार्मिकता ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया, जो परमेश्वर की सब आज्ञाओं के पालन में प्रकट होती है। बहुतों की दृष्टि यीशु से हट गई थी। उनकी आँखों को उसके दिव्य व्यक्तित्व, उसके गुणों, और मानव परिवार के प्रति उसके अपरिवर्तनीय प्रेम की ओर मोड़ा जाना आवश्यक था। समस्त सामर्थ्य उसके हाथों में दे दिया गया है, ताकि वह मनुष्यों को उदार वरदान बाँटे और असहाय मानव अभिकर्ता को अपनी ही धार्मिकता का अमूल्य उपहार प्रदान करे। यही वह संदेश है जिसे परमेश्वर ने संसार को देने की आज्ञा दी है। यह तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है, जिसे ऊँची आवाज़ में घोषित किया जाना है, और जिसके साथ उसके आत्मा का बड़े परिमाण में उड़ेलना जाना होगा। टेस्टिमोनीज़ टू मिनिस्टर्स, 91.

इस समय का सत्य, अर्थात् तीसरे स्वर्गदूत का संदेश, को ऊँचे स्वर में, अर्थात् बढ़ती हुई शक्ति के साथ, प्रचारित किया जाना है, जैसे-जैसे हम महान अंतिम परीक्षा के निकट आते हैं। 1888 की सामग्री, 1710.

"कसौटी का समय हम पर आ पहुँचा है, क्योंकि पापों को क्षमा करने वाले उद्धारकर्ता मसीह की धार्मिकता के प्रकाशन में तीसरे स्वर्गदूत की प्रबल पुकार पहले ही आरंभ हो चुकी है। यह उस स्वर्गदूत के प्रकाश का आरंभ है जिसकी महिमा पूरी पृथ्वी को भर देगी।" चयनित संदेश, पुस्तक 1, 362.

"पिछली वर्षा परमेश्वर की प्रजा पर बरसाई जानी है। एक सामर्थी स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरना है, और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो जानी है।" Review and Herald, April 21, 1891.